ध्यान-कक्ष
समभाव-समदृष्टि का स्कूल

DHYAN-KAKSH
SCHOOL OF EQUANIMITY & EVEN-SIGHTEDNESS

ध्यान-कक्ष
यानि
समभाव समदृष्टि का स्कूल
(परिचय)

एकता का प्रतीक

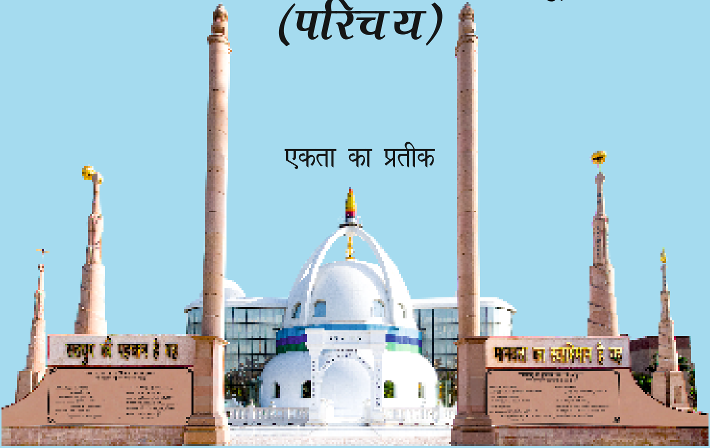

सतयुग की पहचान है यह, मानवता का स्वाभिमान है यह

SATYUG DARSHAN TRUST (REGD.)

मार्गदर्शक बल
(Guiding force)
सतवस्तु का कुदरती ग्रंथ

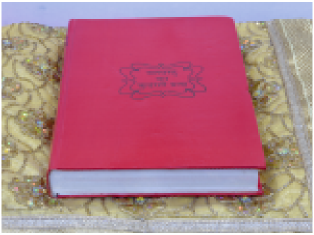

पढ़ो, समझो व अमल में लाकर
श्रेष्ठ मानव बन जाओ।

इसे पढ़ने के लिए इस QR Code को स्कैन करें।

प्रकाशक
सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)
"वसुन्धरा" ग्राम भूपानी–लालपुर रोड फरीदाबाद–121002 (हरियाणा)
ई–मेलः info@satyugdarshantrust.org | website: www.satyugdarshantrust.org
© सर्वाधिकार सुरक्षित सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.) | ISBN : 978-93-85423-71-0

प्रथम संस्करण | जुलाई, 2024

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,

उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं, ज्ञान को अपनाओ और

निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह,

इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहो

ओ३म् अमर है आत्मा,

आत्मा में है परमात्मा

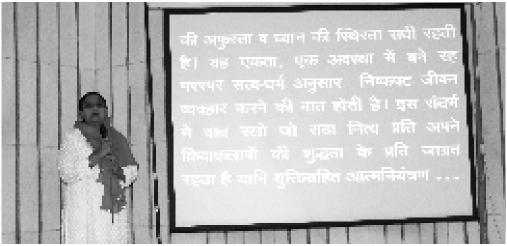
की अफुरता व ध्यान की स्थिरता बनी रहती
है। यह एकता, एक अवस्था में बने रह
परस्पर सत्य-धर्म अनुसार निष्कपट जीवन
व्यवहार करने की बात होती है। इस संदर्भ
में याद रखो की सदा नित्य प्रति अपने
क्रियाकलापों की शुद्धता के प्रति जागृत
रहना है यानि सुनियोजित आत्मनियंत्रण ...

सच्चाई
धर्म
सम

ध्यान-कक्ष
यानि समभाव समदृष्टि का स्कूल
(परिचय)

समय-चक्र/काल-चक्र व उसके अनुकूल होने वाला परिवर्तन

सबको ज्ञात ही है कि कुदरत ने समयकाल को चार युगों में बाँट रखा है। यह चार युग हैं सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग। अब जैसा कि कहा गया हैः-

युग आते हैं युग जाते हैं,
पर समयकाल कहाँ रुकता है।
यह तो चलते चलते हुए भी,
इक नए युग को रचता है।।

इस नियम के अनुसार यह जगत युगांतरों के निरंतर चक्र से गुज़रता रहता है। ठीक निश्चित समय के बाद इस संसार का पुनः सृजन होता है। ब्रह्माण्ड के सृजन और विनाश की यह क्रिया ठीक काल-चक्र में होने वाले ऋतुओं के परिवर्तन की भाँति ही बनती और बिगड़ती रहती है। अन्य शब्दों में ग्रीष्म, वर्षा, शरद, शीत, हेमन्त व बसंत ऋतुओं की भाँति ही प्रत्येक युग में धीरे-धीरे जटिल क्रमिक परिवर्तन होते हैं जिससे प्रभावित

होकर पृथ्वी व प्रत्येक प्राणी की अंतर्चेतना को सम्पूर्णतया पूर्व निर्धारित प्रक्रिया से गुज़रना पड़ता है।

इस परिप्रेक्ष्य में काल-चक्र के स्वर्णिम प्रकाशमय युग से अंधकारमय युग तक तथा पुनः अंधकारमय युग से सुनहरी युग तक पहुँचने के अन्तराल में हुए परिवर्तन का मुख्य कारण सूर्य यानि केन्द्र-बिन्दु के इर्द-गिर्द हमारे सौरमण्डल की गति में हुए परिवर्तन होते हैं। इस प्रकार सृष्टि के सृजन के उपरान्त क्रमशः सतयुग, त्रेता, द्वापर व कलियुग तथा कलियुग के पश्चात सतयुग आना सुनिश्चित होता है।

इस विषय में यह भी जानो कि समय के साथ-साथ सामाजिक रीति-रस्म, सिद्धान्त, रहन-सहन, आचार-व्यवहार, प्रथाएँ, परस्पर विश्वस्तता, अवसर, समयाचार यानि धर्म और उनके साथ-साथ कार्य व्यवस्था आदि भी बदलते रहते हैं। साथ ही साथ चेतना यानि ज्ञानशक्ति, बोध, समझ, बुद्धि, अनुभूति, नाम, युक्ति, योग, संविधान यानि वह विधान या कानून जिसके अनुसार किसी राज्य, राष्ट्र अथवा संस्था का संगठन, संचालन और व्यवस्था होती है, वह भी बदलती रहती है। इसलिए तो कहा जाता है किः-

समय तो समय है चलता है रहता,

हर शै का रंग रूप बदलता है रहता
सुनो ध्यान देकर समय क्या है कहता,
मेरे संग चले जो आनन्द में है रहता

समय का आवाहन

इस विषय में अब हम समय के जिस महत्वपूर्ण संक्रमण काल में हैं उसके अंतर्गत असत्य, अधर्म और पाप का प्रतीक कलियुग जा रहा है और सत्य, धर्म और पुण्य का द्योतक सतयुग आ रहा है। जैसा कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा भी गया है:

कलुकाल हुण जांदा, नी ओ जांदा,
नी ओ जांदा, नी ओ जांदा।
सतवस्तु हुण आंदा, नी ओ आंदा,
नी ओ आंदा, नी ओ आंदा।।
सतवस्तु दा सत् बोलचाल,
सतवस्तु दा सत् बोलचाल
कैसी ओ चमक दिखांदा, नी ओ दिखांदा,
नी ओ दिखांदा, नी ओ दिखांदा

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, पंचम सोपान,
कीर्तन न० 29)

अब जिस बदलाव का यह कुदरती संकेत है उसके दृष्टिगत हम सबके लिए बनता है कि हम इस सत्य के प्रति जागरूक हो, आने वाले युग विशेष की प्रवृत्ति यानि युग चेतना को धारण कर, तद्‌नुरूप अपनी चाल या व्यवहार को सत्यता अनुरूप ढालने वाले युगधर्मी बनें व अपनी वास्तविक शान को प्राप्त हों। अन्य शब्दों में समय रहते ही अपने चेतनायुक्त व्यवहार के बल पर सबके प्रति अपने समस्त कर्त्तव्यों का कुशलतापूर्वक संपादन करते हुए अपने जीवन की दिव्यता को दृढ़तापूर्वक आत्मसात् कर अपनी अजर-अमर हस्ती का सत्य पहचान लें। इसके विषय में जागरूक करते हुए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा भी गया हैः-

दोस्ती छड के ते कलुकालड़े दी,
राम नाम नाल कर लो प्यार सजनों।
राम नाम ही संग चलना जे,
दोस्ती उसे दे नाल हुण लावो सजनों।।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, तृतीय सोपान,
कीर्तन न० 33)

निःसंदेह इस हेतु नियत समय पर ही मानसिक रूप से इस अवश्यम्भावी परिवर्तन के प्रति तैयार हो, सचेतन होने की आवश्यकता है और परिवार, समाज व राष्ट्र

OPEN HOUSE
DISCUSSION

को जीर्ण करने वाली मान्यताओं को समाप्त कर, आगामी युग सतयुग की नवीन मान्यताओं को स्थापित करने वाले महापुरुष यानि नव युग के निर्माता अर्थात् युगपुरुष बनने की जरूरत है।

वर्तमान समय में 'ध्यान-कक्ष' यानि समभाव-समदृष्टि का स्कूल खोलने की आवश्यकता

जानो कुल मानव जाति को अपनी सर्वोत्कृष्टता के अनुकूल समर्थवान बनाने हेतु ही, सतयुग दर्शन वसुन्धरा परिसर में यह 'ध्यान-कक्ष' यानि समभाव-समदृष्टि का स्कूल खोला गया है ताकि द्वि-भाव के कारण कलियुगी भाव-स्वभावों से त्रस्त मानव जाति समभाव अपना कर, सतयुगी भाव-स्वभाव अनुरूप अपना चारित्रिक निर्माण करने में सक्षम हो, सदाचार व सद्व्यवहार की राह पर प्रशस्त हो सके व परस्पर आत्मीयता युक्त सजन भाव यानि मैत्री भाव का व्यवहार करते हुए एकता, एक अवस्था में सुख-शांति से बनी रह सके।

सतयुग दर्शन वसुन्धरा से तात्पर्य

आपकी जानकारी के लिए इसलिए ध्यान कक्ष जिस पावन स्थल पर बना है उस स्थान का नाम सतयुग

दर्शन वसुन्धरा है। सतयुग यानि सृष्टि रचना का आरम्भिक समयकाल, दर्शन यानि साक्षात्कार तथा वसुन्धरा यानि पृथ्वी। इस तरह सतयुग दर्शन वसुन्धरा का अर्थ हुआ पृथ्वी पर ऐसा स्थान जहाँ से सतयुग की आद् संस्कृति व आचार-संहिता का दर्शन कराया जाता है।

ध्यान-कक्ष के विशिष्ट बिन्दु

यह ध्यान-कक्ष स्थापत्य कला की अद्वितीय मिसाल है। यहाँ की हर कलात्मक कलाकृति के पीछे एक अद्वितीय आध्यात्मिक अर्थ छिपा है। जैसे-जैसे आप उस अर्थ की गहराई में उतरते जाएंगे वैसे-वैसे आपको उसके पीछे छिपे राज़ की समझ आती जाएगी।

यह ध्यान-कक्ष, अपने आप में, चिर स्थाई शांति प्राप्त करने हेतु, सर्व सांझा, श्रद्धा स्थल है जहाँ से बिना किसी भेदभाव यानि रंग-भेद, जाति-पाति, अमीरी-गरीबी यानि वड-छोट के हर आयु-वर्ग के इच्छुक सजनों को समभाव समदृष्टि की युक्ति अनुकूल आत्मिक ज्ञान प्रदान किया जाता है। जैसा कि कहा भी गया है:-

ध्यान कक्ष यह ध्यान कक्ष,
सबका सांझा ध्यान कक्ष
सतयुग की पहचान है यह
मानवता का स्वाभिमान है यह

भौतिक ज्ञान से भिन्न आत्मिक ज्ञान प्रदान करने इस अनूठे विद्यालय को 'समभाव-समदृष्टि के स्कूल' के नाम से जाना जाता है व यह 'सतयुग की पहचान व मानवता का स्वाभिमान माना जाता है। सतयुग की पहचान इसलिए क्योंकि युग परिवर्तन के सत्य को दृष्टिगत रखते हुए, यहाँ से प्रत्येक मानव को कलियुगी भाव-स्वभाव छोड़, सतयुगी नैतिक आचार संहिता अपनाने के लिए युक्तिसंगत प्रेरित किया जाता है तथा मानवता का स्वाभिमान इसलिए क्योंकि यहाँ से हर मानव को धार्मिक भिन्न-भेद से उबर, संतोष, धैर्य अपना कर, सत्य की राह पर निष्कामता से चलते हुए, निज मानव धर्म पर खड़े हो परोपकारी बनने के प्रति उत्साहित किया जाता है।

इस तरह एकता के प्रतीक इस ध्यान कक्ष से सबको, सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते को ध्यानपूर्वक साधने की, तालीम दी जाती है व समभाव नज़रों में कर यानि अपने व सबके हृदयों में उस सर्वव्यापक भगवान को हाज़िर नाज़िर मानते हुए, परस्पर समदर्शिता अनुरूप सबको

एक नज़र से देखते हुए, एक रस व्यवहार करने की प्रेरणा दी जाती है ताकि द्वि-द्वैत युक्त भिन्नता का भाव समाप्त हो और आज का विषय ग्रस्त, निर्बल मानव, विचार, सत्-ज़बान, एक दृष्टि व एक अवस्था में आ, अपनी हस्ती की यथार्थता यानि ज्ञान, गुण व शक्ति को जान जाएं और सजनता का प्रतीक बन, इस धरती पर पुनः सतयुग जैसा सर्वोत्तम समयकाल ले आए।

इसके अतिरिक्त इसकी एक प्रमुख विशेषता यह है कि यहाँ पर न तो कोई सेवक-स्वामी, भक्त भगवान व गुरु-चेले का भाव है और न ही नश्वर शरीरों व तस्वीरों की पूजा मानता को यहाँ महत्त्व दिया जाता है। यहाँ पर तो शब्द अर्थात् मूलमंत्र आद् अक्षर, ओ३म् अमर आत्मा को ही गुरु माना जाता है व उसी प्रणव मंत्र के साथ, ख़्याल व ध्यान का सम्पर्क स्थापित कर, सीधा कुदरत से ही, आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने की व नित्य में श्रद्धा बढ़ाने की प्रेरणा दी जाती है। जैसा कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा भी गया है:-

ओ३म् है जप तप, ओ३म् है पूजा,
ओ३म् दा है विस्तार जी
जपो ओ३मकार शब्द ओ३मकार जी,
ओ ओ ओ जपो ओ३मकार शब्द ओ३मकार जी,

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, चतुर्थ सोपान,
कीर्तन न० 44)

मजेदार बात तो यह है कि मानव उत्थान से संबंधित होने के नाते इस अनूठे स्कूल में प्रवेश प्राप्ति के लिए कोई आयु-सीमा व शुल्क इत्यादि नहीं रखी गई है। इस संदर्भ में जो भी सच्चे दिल से सजन सीस अर्पण कर यानि अपनी हौं-मैं/अहंकार का परित्याग कर, ईश्वर के आदेश की पालना करने हेतु तत्पर होता है वह आसानी से इस स्कूल में प्रवेश पा सकता है। इस विषय में सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा हैः-

समभाव समदृष्टि दा स्कूल खोलने लगे,
कोई विरला दाखिल होवेगा।
खोलेगा ओ जगत दा वाली,
ओथे फ़ीस नहीं जे कोई।।
सीस अर्पण करके ते कोई,
उस शब्द ते ओ खलोवेगा।
उस शब्द ते ओ खलोवेगा,
उस शब्द ते ओ खलोवेगा सजन।।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सप्तम सोपान, भाग-प्रथम, कीर्तन न० 10)

अंत में सजनों हम तो यही कहेंगे कि कुल मानव जाति के लिए यह परम सौभाग्य की बात है जो कि कुदरत के हुकम अनुसार कलियुग के इस घोर अंधकारमय समय में जीवों के आत्मोथान हेतु, इस आत्मिक विद्या प्रदान

करने वाले स्कूल का आरंभ किया गया है। अतः हमारा सबसे निवेदन है कि इस अवसर का पूर्ण लाभ उठाएं और यहाँ से सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ अनुसार प्रदान किए जा रहे आत्मिक ज्ञान का अनुशीलन कर अपना जीवन सफ़ल बनाएं। अंत में सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ अनुसार याद रखेंः-

समभाव समदृष्टि दा महाराज स्कूल खोलने लगे,
आ आ आ आ।
कोई विरला आके दाखिल होसी सजनों।
विचार शब्द नाल जेहड़ा सजन पकड़े आप नूं,
खालस सोना हो के ओ शामिल होसी सजनों।।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सप्तम सोपान, भाग-प्रथम, कीर्तन न० 13)

Learn the science of inner dimensions

at **Dhyan-Kaksh**

School of Equanimity & Even-sightedness

विषय

ध्यान-कक्ष

- ध्यान-कक्ष यानि समभाव-समदृष्टि का स्कूल (परिचय)

आत्मज्ञान

- आत्मज्ञान
- आत्मज्ञानी की पहचान
- आत्मिक ज्ञान के लिए पहली आवश्यकता
- आत्मिक ज्ञान एवं भौतिक ज्ञान में अंतर
- आत्मिक ज्ञान प्राप्ति से लाभ

शरीर/प्राण/भाव/दृष्टि को सम रखना

- शीश अर्पण व शारीरिक समता साधने का महत्त्व
- प्राण को सम रखने की कला
- भाव
- समभाव
- समभाव साधना
- समदृष्टि
- समबुद्धि एंव समभाव-समदृष्टि का व्यावहारिक रूप

अपनी पहचान

- निज मानव स्वरूप की पहचान
- यथार्थ ब्रह्म स्वरूप की पहचान
- ब्रह्म
- शब्द ब्रह्म
- ओ३म शब्द की महानता व महत्ता

समभाव-समदृष्टि का कायदा

- जिह्वा स्वतन्त्र अर्थात् आहार एवं वाणी संयम
- संकल्प स्वच्छ
- दृष्टि कंचन

आत्मविजय

- आत्मनिरीक्षण
- आत्मसंयम/आत्मनियन्त्रण (भाग-1 और-2)
- आत्मानुशासन एवं आत्मविजय

विचार एवं विवेक

- विचार
- विवेक
- विवेक जाग्रति
- विवेकशील मानव की पहचान

Offline classes and activities

Every Sunday from 12.45 pm to 1.45 pm

at Dhyan-Kaksh, Satyug Darshan Vasundhara,
Bhopani-Lalpur Road, Greater Faridabad - 121002

Online classes can be viewed at

आप इस विषय का वीडियो निमलिखित लिंक (QR code) पर स्कैन करके देख सकते हैं ।

View this class by scanning this QR code link

Initiatives of Satyug Darshan Trust (Regd.) on Humanity and Ethics

INTERNATIONAL HUMANITY OLYMPIAD
www.humanityolympiad.org

HUMANITY DEVELOPMENT CLUB
www.awakehumanity.org

For FREE workshops in your School, College and groups

Scan for Dhyan-Kaksh Social Media

Contact

Mobile : +91 8595070695

Email: contact@dhyankaksh.org

Website: www.dhyankaksh.org

Scan for Dhyan Kaksh Location

https://bit.ly/3v4O8B2